अंगदेश. कॉम के लेली
सप्रेम भेंट।
6.XII.2023

हरेन्द्र व्यंग्य-वाण

(अंगिका व्यंग्य रचना के संकलन)

संकलनकर्तृ

बुलबुल कुमारी

कृति : हरेन्द्र व्यंग्य वाण
(अंगिका व्यंग्य रचना के संकलन)

संकलनकर्तृ : **बुलबुल कुमारी**
ग्राम–नारायणपुर
पो0/थाना–सुलतानगंज
(भागलपुर)– 813213

प्रकाशन तिथि : 15 अगस्त 2022 अमृत महोत्सव

सर्वाधिकार : ©

शब्द संयोजन, मुद्रण व आवरण : मोदी ऑफसेट प्रिंटर्स
आत्माबाजार, पहली मंजिल,
सुलतानगंज (भागलपुर)

प्रकाशक : चन्द्रकांता प्रकाशन

सहयोग राशि : **100/-**

HARENDRA BYANGY-VAN
Sankalan kartri Bulbul Kumari

समर्पण

बलिदानों के बुनियाद पर टिकलों भारत देश के सुरक्षा लेली समर्पित आरु संकल्पित सैनिक प्रवर प्राणेश

श्री विभाष कुमार
आर्मी नं०-15412250N
के

समर्पित

जिनी परिवार आरु समाज सें बढ़ी देश सेवा कें अपनों जीवन के लक्ष्य बनैलके।

-बुलबुल कुमारी

उद्‌गार

हमरों पिताजी श्री हीरा प्रसाद हरेन्द्र अंगिका आरू हिन्दी के चर्चित कवि–साहित्यकार आरू अखिल भारतीय अंगिका साहित्य कला मंच के महामंत्री जिनकों हिन्दी आरू अंगिका के ढेर गीत–गजल, कथा–कहानी आकाशवाणी भागलपुर आरू दूरदर्शन पटना सें प्रसारित होतें रहै छै। दर्जन सें पार पुस्तक के प्रणेता, जिनकों हिन्दी–अंगिका कविता–गीत–गजल, कहानी, आलेख, समालोचना शताधिक देश–विदेश के पत्रिका आरू अभिनंदन ग्रंथ में छपी चुकलों छै, आरू आधा दर्जन प्रबंध काव्य खासकरी कें अंग क्षेत्र में छैलों छै। एक–आध प्रबंध तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर के स्नाकोत्तर विभाग के पाठ्य क्रम में भी सामिल छै। विश्व कविता कोष में भी कुछ प्रबंध आरू रचना कें स्थान प्राप्त छै।

हम्में पिताजी के साहित्यिक प्रभाव सें प्रभावित अध्ययन–काल सें ही छियै। हमरा खूब याद छै कि हजारों के तादाद में बैठलों लोगों बीचें 'कन्ना गुज–गुज कोन कोना' गीत रंगमंच सें हम्में सुनैनें छियै। द्व–चार पंक्ति तुकबंदी करी कें विद्यालय में भी सुनैलों करै छेलियै, अंत्याक्षरी खेल में ई तुकबंदी बड्डी काम आबै। किसान, नवयुवक नाट्य कला परिषद् कटहरा के रंगमंच सें कभी खाली लड़की द्वारा नाटक मंचन करलों जाय छेलै, जैमें लड़की के अभिनय लड़की तें करबे करै, लड़का के अभिनय भी लड़की द्वारा ही होय छेलै। वै नाटक में भागीदारी निभैतें होलों गीत प्रस्तुत करना भी हमरा खूब अच्छा लागै छेलै। पिताजी 'शीर्षक संगीत' के रूपों में नाटक में भाग लै बाला पात्र के परिचय खुद प्रस्तुत करै छेलै, जे अभियो हमरा कंठस्थ छै–

हॉल के अन्दर बिना टिकट कोई आना नहीं,
ड्रामा देखने, ड्रामा देखने।
ओ मेरे भाई! ओ मेरी बहिना!
कोण्टर पर जाना और टिकट कटाना। हॉल.....
'जीवन मूल्य' ड्रामा आज दिखाना है।
लेखक बी.एन. 'सत्यम' जाना–माना है।

मणिशेखर का रॉल साधना करती है
दारोगा के वेश में अंजु उतरती है।
ऐ मेरे भाई। ...
प्रेमलता ऋषिमोहन बनकर आती है।
प्रीतिलता सकोनी रूप सुहाती है।
अमित अमन अनुपमा रूप बनाती है।
साधु सुमन, निशांत पुनीता भाती है।
ऐ मेरे भाई।....
स्वीटी सुधि और साक्षी नूतन रहती है।
अर्चना अंकित बनकर सब कहती है।
अप्पी, जूही, पुलिस का रौब जमाती है।
ब्यूटी रिकार्डिग डान्स और बुलबुल आती है।
ऐ मेरे भाई !....

पिताजी द्वारा आयोजित गामों के कवि सम्मेलन में प्राय: श्रोता के रूपों में रहै के मौका मिलै छेलै। एक बार बगल के गाँव उधाडीह में राज्य स्तरीय सर्वभाषा सद्भावना काव्योत्सव के आयोजन छेलै। जहिनों कि पिताजी बताय छेलै, वै काव्योत्सव में बहत्तर कवि भाग लेनें छेलै। आकाशवाणी भागलपुर के डायरेक्टर माननीय शिव मंगल सिंह मानव, श्रीमती सांत्वना साह उर्फ चम्पा बहिन श्री विजय कुमार मिश्र उर्फ बिरजू भाय आरू श्री कुसुमाकर दूबे सिनी आमंत्रित छेलै। पुल निर्माण के क्रम में मुख्य मार्ग वाधित होला के कारण उक्त महानुभाव के गाड़ी कटहरा होतें होलों मासुमगंज के राह उधाडीह जाना छेलै। हमरों सौभाग्य कहियै उनकों सबके अगुआनी आरू मार्गदर्शन के भार पिता जी पर ही छेलै। यही कारण सबकें हमरों घरों पर आबै के आरू हमरा सेवा करै के अवसर प्राप्त होय गेलै। हमरों सेवा या स्वभाव के कारण कहों, चम्पा बहिन उधाडीह के रंगमंच सें भी कविता में हमरा नामों के चर्चा करलकै। लौटै बेर भी हुनी सब फेनूँ हमरा घरें ऐलै, चाय–पानी पीवी कें गेलै। सड़कों पर पचासो आदमी रेडियो सें सुनलका नामों के व्यक्ति के दर्शन लेली उताबला छेलै। सबके मुँहों से बरबस निकलै रहै कि आय तें हीरा बाबू के घर आकाशवाणियें उतरी गेलों

है। कुछ लोग जवाब में कहै–हीरा बाबू तें यहें कमैन्हें छै।

पिता जी के देखा देखी आरू चम्पा बहिन के उसकैला पर एगो छोटों टा कविता अंग माधुरी कें छपै लेली चकोर बाबा के पास भेजी देलियै। चकोर बाबा अंगमाधुरी में कविता छापी अंगमाधुरी में छपै वाला रचनाकार के शृंखला कें तें बड़ों करबे करलकै मतर हमरा मनों कें जे बड़ों करलकै अभियो ताँय याद छै। पत्रिका में छपलों जीवन के पहिलों कविता लिखनें बिना नैं रहलों जाय छै–

मैया हमरों जान छेकें, मैया हमरों जान छेकें,
जीवन के पहिचान छेकें, अंधकारो दूर भगाबै वाला
तों दिनमान छेकें।।
जीयै के पाठ पढ़ैनें छें, दुनिया के ज्ञान करैनें छें,
जीवन रक्षण खातिर तोहीं, अमृत रंग दूध पिलैनें छें।
गीता औ कुरान तोहीं छें, बाइविल पुरान तोहीं छें,
तोरा सें बढ़लों के जग में, ग्रंथों के बखान तोहीं छें।
तों हमरों अरमान छेकें,तों हमरों वरदान छेकें,
बाल्मीकि रामायण बोलै, तों मैया गुनखान छेकें।

बच्चा कें खुश करै लेली खुद गैतें रहना हमरा अच्छा लागै छै।

रागो के नानी आबी कें, रागो कें समझाबें तों।
रागो कें फुसलाबै वाला, लोक–गीत सुनाबें तों।।

अहिनों पंक्ति लिखी–लिखी उद्गारों कें बड़ा करना आबें ठीक नैं छै। कवि सम्मेलन में पिताजी कें स्टैण्ड बाला माइक ढेर पसंद आवै छै। हाथों में किताब–कॉपी या डायरी कभियो नैं देखै छियै। खुला दोनों हाथ भाव के अभिव्यक्ति में लगाना इनका अच्छा लागै छै। बात–बात पर ताली के गड़गडाहट सब दिन इनका प्रोत्साहित करतें रहलों छै। हम्में कवि सम्मेलन में महसूस करलियै कि इनका द्वारा प्रस्तुत कविता प्राप्त करै लें श्रोता उतावला होय जाय छै, मगर इनका जिम्मा लिखलों तें रहबै नैं करै छै। लोगों के ई सोच सें प्रभावित होय कें हम्में इनकों कुछ संकलनों में, कुछ पत्र–पत्रिका में, कुछ डायरी में लिखलों कविता कें जमा करी एक नया संकलन निकालै के मनसूबा बनैलियै। इनकों कविता तें प्रकाशित–अप्रकाशित हिन्दी आरू

अंगिका के ढेरी छै, मगर हम्में खाली अंगिका के व्यंग्यात्मक कविता कें खोजी–खोजी पाण्डुलिपि तैयार करलियै आरू 'हरेन्द्र व्यंग्य वाण' के रूपों में प्रकाशित कराय, अंगिका प्रेमी के हाथों में थम्हाय, अंगभूमि के गरदा में लोटी–लोटी पलै, बढ़ै, पढ़ै आरू जीवन यापन करै के कर्ज सें माथों कें कुछ हलका करै के प्रयास करलियै। प्रयास तें यहो छै कि पिताजी के व्यक्तित्व आरू कृतित्व कें यही बहाना एक–दू पीढ़ी आगू लें जइयै। प्रायासिक सफलता के मापदण्ड तें पाठक के जिम्मा छै। अन्त में जीवन साथी श्री विभाष कुमार के प्रति आभार प्रकट नै करना अनुचित होतै जिनकों आर्थिक सहयोग सें ही पुस्तक के प्रकाशन संभव हुबें पारलै।

एक सैनिक के सम्पूर्ण पारिवारिक दायित्व कें निभैतें होलों कुछ लिखतें रहै के भाव हृदय में समैलों रहै छै। चीनी के आतंकें मन कें झकझोरी कें कुछ कलम सें निकलवैलकै। ऊ हिन्दी के कुछ पंक्ति कहाँ, केना, कहिया प्रकाश में ऐतै कि डायरी के शोभा ही बढ़ैतै, ई सोची कें ऐझें आभारित जीवन कें यहों समर्पित करै छियै–

हे प्राणेश विभाष जी ! भारत माँ के लाल।
फौजी बनकर के किया, उन्नत माँ का भाल।।
रक्षा करने देश की, धार लिये हो अस्त्र।
आतंकी मँड़रा रहा, यत्र–तत्र–सर्वत्र।।
बलिदानी बुनियाद पर, टिका हुआ है देश।
चीनी–पाकिस्तानियो, उसे दे रहे क्लेश।।
सबक सिखाने दुष्ट को, दो मुँहतोड़ जवाब।
भारत से टकराने का, मिट जायेगा ख्वाव।।

–बुलबुल कुमारी
पटेल कॉलोनी, पानी टंकी रोड,
सुलतानगंज, भागलपुर–813213
मो०–8294624146

'हरेन्द्र' व्यंग्य–वाण

अनुक्रमणिका

		पृष्ठ
1.	संकलन कर्तृ का उद्‌गार	03
2.	अनुक्रम	07
3.	माय भगवती	09
4.	चिल्का सें गरतरे भारी	11
5.	महात्मा गाँधी	13
6.	भावना	15
7.	वर्ग आठ शिक्षक–दो–एक	16
8.	गेहूँ के वितरण झगड़ा के घोंर	18
9.	ऐलों छै कहिनों वसन्त बहार	19
10.	सभ्भे लागै छै उमतैलों	21
11.	लाचारी	26
12.	गिरावट	27
13.	बात कहाँ तक सच्चा छै	29
14.	गरीबी मिटाना	31
15.	बुड़बक के धोंन	33
16.	सोनिया करै सवाल	33
17.	अलबत्ते छै	34
18.	उड़ियैलै सभ्यता	34
19.	के छै इंसान अखनी	35
20.	कहिनें लोर बहाबै छों	36
21.	कोय काहू मगन	37
22.	कामों सें होथों पहचान	37
23.	आकाशों में दीप जलैबै	38
24.	के करतै तक रार तोरा सें	38
25.	रस्ता में काँटों गाड़ै छों	39
26.	की बतैय्हों हाल सबके	40
27.	बढ़लों उत्पात छै	40

28. साँपों छुछुनरी वाला हाल 41
29. जों तों चाहों 43
30. वोट 44
31. जेकरा खातिर करै छी चोरी 45
32. धोखा 46
33. क्षणभंगुरता 47
34. चुनाव 48
35. चौपदी 49
36. उखड़ी में मूड़ी 51
37. गीत–लोरी 54
38. दमकल देखी लेलाँ 55
39. बापों के टीक नैं 57
40. जहिनों गलती हम्में करलों 59
41. ऊ जीना की छेकै जीना 60
42. खोटा कें होल्हौं 61
43. मुत्तक 62
44. आत्महत्या 63
45. मंत्री जी 64
46. पाकिस्तानी छै लतकुच्चों 65
47. नारी 66
48. चिन्ता 67
49. अंगिका लें मस्थैं छी 68
50. सदा हसैलों श्रोता कें 69
51. हितैषी पर भरोसा 69
52. प्रकृति गीत 70
53. परिचय 71

।। माय भगवती।।

हे माय भगवती हमरा
भक्ति के वरदान दें !
अनीति–अन्याय आरू
आसुरी माया,
हेकरों मकड़जाल देखि
कल्पै छै काया।
मोह–पाश काटै वाला
शक्ति के वरदान दें।

अस्त्र–शस्त्र धारी मैया,
सिंह के सवारी,
सबकें त्राण देल्हें
महिषासुर मारी।

शरण पड़ल छी मैया
हमरा ऊपर ध्यान दें।
बायाँ सरस्वती शोभों
लक्ष्मी तोरों दहिना।

जगत् के कल्याण करों
मिली तीनों बहिना।
हरदम गुणगान करौं
वोहिनें जुवान दें।
हे माय भगवती हमरा
भक्ति के वरदान दें।

♦♦♦

।। चिल्का सें गरतर छै भारी।।

इंगलिस स्कूल के बलिहारी।
चिल्का सें गरतर छै भारी।

स्कूलो जैतें देखों लड़का।
ओकरा जिमा थैला बड़का।
जै में किताब–कापी भरलों।
टीफिन के बक्सा छों धरलों।
पानी लेली बड़का बोतल।
पीठी पर छों लदलों टोटल।
दंग रही जा देखी बस्ता।
चलना मुश्किल लागै रस्ता।
बोझों सें दबलों छौं बच्चा।
उमरो छै एकदम्हैं बच्चा।
लागै जेना माल–सवारी।
चिल्का सें गरतर छै भारी।

चार बजे भोरे सब जागी,
माय जलाबै चुल्हा आगी।
नास्ता–पानी रोज बनाबै।
बच्चा कें भोरे नहबाबै।
बच्चा कलपी–कलपी कानै।
बिन नहबैनें कौनें मानै।
आगू में देनें छों नास्ता।
माय सजाबै तबतक बस्ता।
खौतें बच्चा आनी–बानी।
देर लगावै जानी–जानी।

के सुनै ओकरों लाचारी।
चिल्का सें गरतर छै भारी।।

अक्षर गिनती घरें सिखाबों।
फैशन ऊपर खूब चढ़ाबों।
अनपढ़ माँ हों, बाप कमाऊँ।
जो पढ़लों छौं काम चलाऊँ।
नामांकन में अड़चन तखनी।
अन्तर्वीक्षा होथों जखनी।
गरीब–गरूआ हारी बैठों।
चिन्ता में मन मारी बैठों।
माय पढ़लकी, बाप पढ़लका।
इंगलिस पढ़तै उनके लड़का।
मुरखों कें तें देथों टारी।
चिल्का सें गरतर छै भारी।।

स्कूल सें जब बच्चा आबै।
आंगन ढुकथैं गीत सुनाबै।
गोड ब्लेस मम्मी ओ पप्पा।
सुनथैं माय फुली कें कुप्पा।
डैरी देखी रोज पढ़ाबों।
टास्को पूरे याद कराबों।
ठोकी ठाकी ठोस बनाबों।
स्कूली के तों नाम बढ़ाबों।
खेल छहूँ पैसा के सारा।
पैसा बिना कहाँ छों चारा।
पैसा बिन बैठों मनमारी।
चिल्का सें गरतर छै भारी।।

♦♦♦

।। महात्मा गाँधी।।

हे अवतारी पुरुष महात्मा गाँधी फेनूँ आबों।
भटकी गेल्हों भारतवासी रस्ता कोय सुझाबों।।

आबादी के बोझों सें, ई भारत परेशान छों।
सम्प्रदाय के पीछू पागल, हिन्दू–मुसलमान छों।
भूली गेल्हों सत्य–अहिंसा, सगरे मारा–मारी।
बात–बात पर मरै–मिटै के, लागै छों तैयारी।
सब्भै केरों द्वेष–भावना, केन्हौं जरा मिटाबों।
भटकी गोल्हों भारतवासी, रस्ता कोय सुझाबों।।

आतंकवादी लागै छहूँ, अंग्रेजों के बापे।
फेकै छहूँ गोला–बारूद, चोरों रं चुपचापे।
तोरा नजरों सें ऊ छिपलों, नहियें होथों बाबा
तोरा खातिर दूर कहाँ छों, काशी आरू काबा
कैसें मिटतै आतंकबाद, नुस्खा कोय बतावों।
भटकी गेल्हों भारतवासी, रस्ता कोय सुझावों।

पदलोलुपता लिखलों सब्भे, नेतागण के भालें।
दशा–देश के बदतर होलै, ओकरे सब कुचालें
देश–भक्ति के भाव कहाँ छै, अखनी ककरो अंदर।
मौंन साधनें, देखों टुकटुक, तोरों तीनों बंदर।
देश तरक्की केना करतै, समुचित ज्ञान सिखाबों।
भटकी गेल्हों भारतवासी, रस्ता कोय सुझाबों।

अंग्रेज भगैल्हो सहिये तों, अंग्रेजी नैं भागै।
देशी सें सब चीज विदेशी, घर–घर अच्छा लागै।
पेप्सी, कोकाकोला छोड़ी, लस्सी कहाँ सुहाबै।
मिनरल वाटर अखनी सबके, खूबे मान बढ़ावै।
देशी चीजों के मर्यादा, केन्हों करी बचाबों।
भटकी गेल्हों भारतवासी, रस्ता कोय सुझाबों।

जातिवाद के दलदल बीचें, लोग यहाँ छों फसलों।
निकलै के कोशिश में गेल्हों, गहराई में धसलों।
पहिनें छेल्हों चार वर्ण तें, आबें हेल्हों ढेरी।
भोट–भाट के समय मारथों, जात–पात सब घेरी।
जातिवाद के ई दलदल, कोशिश करी सुखाबों।
भटकी गेल्हों भारतवासी, रस्ता कोय सुझाबों।

कश्मीरो छों महासमस्या, देशों आगू धरलों।
खूब कहै छों देश पड़ोसी, बातो जरलों–जरलों।
दोस्ती केरों नेतागण छों, अभियो हाथ बढ़ैनें।
सत्य–अहिंसा तोरों वाला, लाघों शीश चढ़ैनें।।
साँपे सदा उगलतै जहरे, कतनों दूध पिलाबों।
भटकी गेल्हों भारतवासी, रस्ता कोय सुझाबों।

कार्यालय में लटकै सगरे, तोरों बड़का फोटो।
तोरा साक्षी राखी–राखी, लूटै छों सब नोटो।
खादी कुर्त्ता, खादी बण्डी, पीन्हीं खादी धोती।
तोरॉ सब्भे करलों–धरलों, दैं छों लीपी–पोती।
ओकरों बुद्धि पलटै लेली, कोनों चाल चलाबों।
भटकी गेल्हों भारतवासी, रस्ता कोय सुझाबों।

♦♦♦

।।भावना।।

चाँद हसै छै या कानै छै,
इ कोइये थोड़े जानै छै।
अपनों दुख–सुख साथें सब्भै,
चान्दों कें ऐन्हैं सानै छै।

धरती के परिकरमा करना,
नैं ककर्‌हों देखिकें जरना।
भला–बुरा के भेदे छोड़ी,
विपदा सब्भै जन के हरना।

परोपकारी ई दुनिया में,
ऊँच–नीच नैं, पहचानै छै।
चाँद हसै छै या कानै छै,
इ कोइये थोड़े जानै छै।

विरह–आग में जे जरलों छै,
चिन्ता में बेशी गललों छै।
लाख खाक छानै छै तइयो,
नहियें कुछ संकट टरलों छै।

अपने दुख सें दुखी चाँद कें,
लोर चुबैतें वें मानै छै।
चाँद हसै छै या कानै छै,
इ कोइये थोड़े जानै छै।

♦♦♦

वर्ग आठ शिक्षक दो–एक

हे बिहार सरकार लगाबौं,
शिक्षा पर कुछ बुद्धि–विवेक
वर्ग आठ शिक्षक दो–एक।

केना बढ़तै प्रारंभिक शिक्षा
एक्खै कमरा में पच–पच कक्षा
आपनों घर–द्वार स्वर्ग बनाबौं
मौका छों बढ़िया लाभ उठाबौं।
विद्यालय के छों गड़बड़ हाल
तोरों शासनों के यहें कमाल
नामांकन हम्में खूब करै छी
बच्चा बोलाबें गाँव घुरै छी
गामो सें बच्चा आबै ढेरी
एक्खौं सबकें राखै छी घेरी
तोरों बेबस्था अहिनों तगड़ा
बच्चा बैठै लें करथों झगड़ा
बच्चालें नैं पीयै लें पानी
प्राथमिक स्कूल के अजब कहानी
मिलथों नैं एक्को अभिलेख।
वर्ग आठ शिक्षक दो–एक।।

देखौं सब्भैं बेबस्था तोरों
नैं सपरै छों तें गद्दी छोड़ों
बिन मतलब वाला काम करै छों
कहाँ सुधारों के दम्म भरै छों
पंचायत हमरा पर बोझल्हें

सतबै के कुछ युक्ति खेजल्हें।
आबें भला की बच्चा पढ़ैबों
मुखिया सेवा में समय बितैबों
बिगड़ी जाय भले सब्भे बच्चा
वहें करों तोरा जे–जे अच्छा
हम्हों तें करै छी स्वास्थ्य परीक्षण
चुनाबो कराबै के लौं शिक्षण
बकरी–बोतू भी हम्हीं गिनै छी
जनगणना में कप्पाड़ धुनै छी।
हमरा माथें बोझ अनेक।
वर्ग आठ शिक्षक दो–एक।

♦♦♦

ऐलों छै कहिनों बसन्त बहार।

फूलों कें अखनी भूल्हौ नैं पाबौं
झूठ–मूठ के कोन गीत गाबौं।
कहां देखै छी चंपा–चमेली
कहाँ करै छै भौंरा अठखेली।
सुनै छी कखनूँ कोयल के तान
वसंतों के खाली यहें पहचान।
कलियो–तितलियो गेलों छै दूर
कड़कड़िया धूपों सें मौन छै चूर
छोड़लक भौंरा करना गुंजार।
ऐलों छै कहिनों बसंत बहार।

ग्रंथ बहुत्ते लिखनें–पढ़नें छी
कवितो हम्में बहुत्ते गढ़ने छी
शुरू सें गेलों वसन्तों के गीत
सब्भे लगै बनैलों छै रीत।
परंपरा छै निभावै के बात
केना कहियै आबें दिनों कें रात
नीरों–क्षीरों के हंस विवेकी
ई मान्यता देभो केना फेकी।
चलों जेना चलै छै संसार।
ऐलों छै कहिनों बसन्त बहार।।

♦♦♦

सब्भे लागै छै उमतैलों

सब्भे लागै छै उमतैलों
पूजा केरों धूम समैलों।।

देहों सें जे हट्टा–कट्टा,
हाथों में बाँसों के फट्टा
लेने बीच सड़क पर ठाढ़ों
चन्दा लेली अड्डी गाड़ों।

गाड़ी रोकी रसीद काटों
आनाकानी करथैं डाँटों
जेरों राखी बड्डी तगड़ा
बात–बात में करतै झगड़ा।

मार–पीट या धक्का–मुक्की
डरलों बोलै छै सब झुक्की
धोंस जमाना 'फैशन मानै'
फट्टा इन्सान्हौं पर तानै।

वीणा पाणि चुप्पी साधी
देखौ सब्भै के बरबादी
मुँह सें निकलै छूछ्छे गारी
पूजा के पहिलों तैयारी।

ककरो नैं राखै समझैलों
पूजा केरों धूम समैलों।

चाहे कुछ होना नैं होना
लौडीस्पीकर कोना–कोना
बजतै खाली भद्दा गाना
नाचै लँगड़ा लूल्हा काना।

मुरती भसौन जहिया करतै
बोतल लानी पहिन्है धरतै
कुछ्छू पीबी कें गुड़भंगा
नाचै में फाड़ै छै अंगा।

पीवी लैछै दारू–ताड़ी
खूब तिरंगा झाड़ै फाड़ी
गैसों सें हरदम बतियाबै
जे मन आबै गाना गाबै।

बच्चा नाचै कमर हिलाबै
माय–बाप देखी मुस्काबै
ई बयार पछिया कै छेकै
लोकलाज पानी में फेकै।

चलन नया छेकै ई ऐलों
पूजा केरों धूम समैलो।

मरै माय तें शोक मनाबों
सबके आगू लोर बहाबों
दुर्गा–काली झूट्ठे मैया
नाच करै छों ता–ता थैया।

तोहें हस्सों मैया कानै
हस्सें वाला कें पहचानै
तोरा आबी समय सिखैथों
माथा पर के भूत भगैथों।

तोरों मझधारों में नैया
हर्ष मनैथों तखनी मैया
सोछो कहिनों लगथों तोरा
जेना माथा पर अंगोरा।

बदलों चलन करों कुछ अच्छा
सम्हरी जैथों घर के बच्चा
मैया धन–बल–विद्या देथों
सबके रोग बलैया लेथो।

बड़का के कुछ करों बतैलों
पूजा केरों धूम समैलों।

।। लाचारी ।।

पहिनें रहै धर्मात्मा ढेरी
पापी छेलै बस दू–चार।
आसान रहै भगवान्हौं कें,
तारै या कि करै संहार।

आबें अधर्मी या कुकर्मी
धरती पर नित बढ़लों जाय।
अन्यायी के बाढ़ो देखी,
ईश्वर–अल्ला डरलों जाय।

धरम के हानि होतें देखी,
लै छेलै तहिया अवतार।
दुष्ट दलन करी धरती पर के,
करै रहै कुछ हल्का भार।

मगर अखनकों दशा निहारी,
भगवान्हौं के फूलै दम्म।
सोचै अखनी सब एक्के रं
ककरा कर्त्ते करबै कम्म।

हे ईश्वर जन संख्या देखों,
बढ़ले जाय रहल छों ढेर।
परिवार नियोजन करतै कम,
लेकिन बड़ी लगतै देर।

आपनें अस्त्र तोंय चलाभो,
तभिये तें होतै कल्याण।
शेष नाग घबड़ाबै पूरा,
उनखौ ऊपर राखों ध्यान।

♦♦♦

।। गिरावट ।।

सतयुग भर सब सत्ते छेलै,
त्रेता आधों भेलै।
द्वापर में कोना भर बचलै,
कलयुग सब्भे गेलै।

नंगा नाच सदा कलयुग में,
धर्म ग्रंथ बतलाबै।
क्रम विकास के उलटा–पुलटा
जरा समझ नैं आबै।

विकासशील सब इ दुनिया में,
आगू बढ़ै छै लोग।
कहीं गिरावट मिलै अगर तें,
हाव छेकै संयोग।

लाठी–भाला सें आगू बम,
गोली–गठ्ठा ऐलै।
अनु–परमाणु एहिनों धातक,
दुनिया भर छिरियैलै।

बापें दादा टैरी कौटन,
नामों सुननें छेलै।
बेटा–पोता पीन्हीं–पीन्हीं,
गरदा–धूलें खेलै।

अखनी देखों कहिनों फैशन,
बढ़ले जाय छै रोज।
एक पर एक रंग–बिरंगा,
होले जाय छै खोज।

पहिनें सें अन्याय धरा पर,
कम्में देखभें भाय।
धर्म–ग्रंथ के पन्ना–पन्ना,
देखों तोंय उल्टाय।।

नाकें कानें, हड़िया–घैलें,
आरू आगिन पानी।
सबसें बच्चा जन्में छेलै,
बड़ी विचित्र कहानी।

अनहोनी ऊ बात सुधरलै,
अखनी हमरा आगू।
सब विकास के बाते छेकै,
ह्रास कहाँ छै लागू।

कलयुग सम युग नहीं दूसरा,
तुलसी बाबा गाबै।
सतयुग सें कलयुग छै गिरलों,
बात समझ नैं आबै।

♦♦♦

।। बात कहाँ तक सच्चा छै।।

जब धर्म–ग्रंथ उलटाबै छी
खूब पढ़ै छी, गाबै छी।
सतयुग, त्रेता, द्वापर सें भी,
कलियुग बढ़लों पाबै छी।
मिलौन करी देखी लहों सब,
कलियुग खाली अच्छा छै।
की कहियों सब पढ़लों–लिखलों,
बात कहाँ तक सच्चा छै।

मन में जे आभौं बात गढ़ों,
पर माथा पर दोष मढ़ों।
जनम–जनम तक साथ निभाबें,
पुनर्जन्म के बात पढ़ों।
ऊ जनमों में जे रहै पोता,
ई जन्मों में चच्चा छै।
की कहियों सब पढ़लों–लिखलों,
बात कहाँ तक सच्चा छै।

परी स्वर्ग सें उतरी आबें,
भू पर बें रास रचाबें।
नामी–नामी ऋषि–मुनि गणकें,
मनमाना खूब नचाबें।
अँगुली ऊपर नाचै वाला,
केना बहभो बच्चा छै।

की कहियों सब पढ़लों–लिखलों,
बात कहाँ तक सच्चा छै।
पहुँचलै तुलसी जबं ससुराल,
लटकै रहै एगो व्याल।
करै प्यार अंधा, नैं सूझै,
रस्सी छेकै याकि काल।
वहिनों के करनें भगवानें,
ऐलों स्वयं सुरक्षा छै।
की कहियों सब पढ़लों लिखलों,
बात कहाँ तक सच्चा छै।

मोहन बंशी तान सुनाबै,
राधा मन–मन मुस्काबै।
सखियन सब के मन बहलाबै,
रास रचइया कहलाबै।
चढ़ी कदम के डाली खेलै,
कृष्ण दोल–दोलिच्चा छै।
की कहियों सब बढ़लों लिखलों,
बात कहाँ तक सच्चा छै।

♦♦♦

।। गरीबी मिटाबों।।

गरीबी मिटाना अगर छों असंभव,
तें मारी गरीबों कें संभव बनाबों।
गरीबे नैं रहतै, न रहतै गरीबी,
यही ना सफल योजना झट बनाबों।
हिफाजत सें कुर्सी हिफाजत सें गद्दी,
हिफाजत सें सत्ता पर सिक्का जमाबों।
रहों बरकरारे इ शासन व्यवस्था,
हमेशा यही रंग चक्की चलाबों।
भरों घोंर पूरा रहौं नैं अधूरा,
जमाना मुताबिक खजाना सजाबों।
सहोदर, सखा संग धोखा–फरेबी,
सदा जिन्दगी के उसूले बनावों।
कभी दल बदल के, कभी हाथ मलके
कभी नाक रगड़ों कभी गिड़गिड़ाबों।
कभी कोन जनता कें की की जरूरत,
लगै कुछ पता जाल सगरे खिड़ाबों।
जहाँ कोय आगू बढ़ै छों समाजें,
तें धींची लें टँगरी कें नीचें गिराबों।
अगर जोरदारे लगै छौं पड़ोसी,
तें डाँटों–डपाटों, डराबों–धिराबों।
तहलका की बोफोर्स गड़बड़ घुटाला,
कि धंधा–कुधंधा सें छाती जुड़ाबॉ।
विदेशी सें कर्जा जहाँ देश माँगे,
बनी जा निमोछा, ई मोछे मुडाबों।

दशा–दुर्दशा देश के आज देखी,
यथाशीघ्र आतंकवादी मिटाबों।
पड़ोसी अगर युद्ध पर छै उतारू,
सबक ओकरा एक बढ़िया लिखाबों।

अगर नाटके सिर्फ मनसा बनै छों,
तें सीमा सै सैनिक कें जल्दी हटाबों।
जहाँ नाटके खेलना छों वहाँ पर,
नैं निर्दोष प्राणी कें बिल्कुल सताबों।

यहू सें अगर शांति नैं छों दिमागें,
तें लाहोर–दिल्ली फनूँ बस चलाबों।
मनोकामना पूर्ण खातिर बिजय के,
निकालों जुलुस रंगरेली मनाबों।

कभी बाबरी मस्जिदों के समस्या,
कभी राम मंदिर कें मुद्दा बनाबों।
विदेशी अगर कंपनी देश आभों,
तें लूटै लें रस्ता डगर सब बताबों।

स्वदेशी समानों कें नाली में डाली,
विदेशी समानों कें माथा चढ़ाबों।
पहिलकों करलका विसारी दिलों सें,
इ जनता–जनार्दन कें पेप्सी पिलाबों।

यही माघ जाड़ा अगर पार होल्हों,
फिकिर तब तें छोड़ी कें मौजे मनाबों।
अगर एक मौका कभी, हाथ ऐल्हों,
बतैभों तभी तेल कतनों लगावों।

♦♦♦

।बुड़बक के धोंन।।

नौकरी में घूसो दू लाख देलौं।
बिहार पुलिस केरों नौकरी पैलौं।।
बैच आरू वर्दी पहिनें देलकों।
कागजों पर योगदान करबैलकों।।

बेतन, भत्ता तबें मिल्है लगलों।
बेरोजगारी भी सिर सें भागलों।।
ठाम्हैं ऐल्हों वहाँ करबैया चेक।
तब खूब खिलैलिहों आमलेट, केक।।

खाय–खाय कें खूब बड़ाय करलखों।
ऑफिस जाय कागज तब भेजैलखों।।
कागज में लिखलखों तबें हमरों छटनी।
बुड़बक के धोंन होशियारों के चटनी।।

♦♦♦

।। सोनिया करै सवाल।।

देशी–विदेशी के बात पर, सोनिया करै सवाल।
विदेशी सभ्यता के सगरे, दिखै छै मक्कड़ जाल।

कोकाकोला, पेप्सी आरू, थम्सोअप के आदी,
छूच्छे शान बघारै सब्भैं, पीन्हीं कें बस खादी।

विदेशी ऋणों सें ही अखनी, भारत देश आवाद।
भला विदेशी औरत केना, करी देतै बरबाद।

हमरा नामें उगलै अखनी, नेता सब्भे आगे।
जबकि सबके चेहरा ऊपर, लखौं विदेशी दागे।।

♦♦♦

।।अलबत्ते छै।।

नीमी गाछ करेला–चढ़लै, अलबत्ते छै।
खाजो तें कोढ़ै में बढ़लै, अलबत्तै छै।
लूटी–पाटी खूब भरै छेलै घर अपनों
अब ताजो उनके सिर पड़लै, अलबत्तै छै।
लबर्बो नीचों के दुखदाई सब्भैं जानैं,
कोय कहाँ ई बातें अड़लै, अलबत्ते छै।
जौनें–जौनें रस्ता–पैड़ा फेकै काँटों,
काँटों ते उनके पग गड़लै, अलबत्ते छै।
एक्के आम सड़लका नैं फेकै के कारण,
आमे पूरा डलिया सड़लै, अलबत्ते छै।
छेलै कहिनों लोभ समैलों भीतर 'हीरा'
साजिस सें कुर्सी लें लड़लै, अलबत्तै छै।

♦♦♦

।।उड़ियैलै सभ्यता।।

उड़ियैलै सभ्यता पछिया बयारों में।
संस्कृति के नाव छै पड़लों मझधारों में।
धरमों के देश ई देखी कें कलपै छै,
जकरा विश्वास छै ईश्वर अवतारों में।
हेरैनें जाय छी हाव सबठो जकरा सें,
भारत के नाम छै सोसें संसारों में।
भूनै छै भाईहै भैया कें गोली सें,
देखलियै बात ई छपलों अखबारों में।
मुश्किल सें भागलै देशों सें अंग्रेजे,
फैलैनें टाँग छै फेनूँ बाजारों में।
केना सुख–शांति पैतै लोगें 'हीरा'
काटै दिन–रात छै सब्भैं तकरारों में।

♦♦♦

।।के छै इन्सान अखनी।।

के कहै छै हम्में छी इन्सान अखनी।
जन्नें देखों हुन्नें छै हैवान अखनी।
के लफंगा, के निहंगा, भीख मंगा,
छै कठिन करना सही पहचान अखनी।
जेकरा घर आय, भुंजी भाँग नै छै,
वें बघारै खूब छुछ्छे शान अखनी।
ऑफिसर बर्दी बिना आबै नजर छै,
पीन्हनें बर्दी चलै शैतान अखनी।
बाघ–भैंसा बीच छिड़लों छै लड़ाई,
झाड़ी–पाती के सागर नीनान अखनी।
अपहरण सरकार आगू छै समस्या,
पर जरा नैं पटपटाबै कान अखनी।
देश खातिर जे गमैलकै जान उनकों,
राच अधूरे छै सकल अरमान अखनी।
राष्ट्र निर्माता, विधाता दूर 'हीरा'
बेविचारी के हुवै सम्मान अखनी।

♦♦♦

।।कहिनें लोर बहाबै छों।।

अपने गीत सुनाबै छों।
हमरा की समझाबै छों।
करनी–धरनी खाको नैं
छूछ्छे गाल बजाबै छों।
कहलों नैं ककरो राखी,
करला पर पछताबै छों।
दारू–ताड़ी पीबी कें,
गैसों सें बतियाबै छों
घरनी जों कुच्छू बोल्हों,
उलटे धोंस जमाबै छों।
दू ठो पैसा फाँड़ा जों,
दूधों रंड्, उधियाबै छों।
ई गल्ली सें ऊ गल्ली,
झूट्ठे तों छुछुआबै छों।
है हाथों के करलों सब,
हौ हाथों सें पाबै छों।
'हीरा' के कहलों राखों,
कहिनें लोर बहाबै छों।

♦♦♦

।। कोय काहू मगन।।

कोय काहू मगन, कोय काहू मगन ककरा कहियै।
आय सबके लगै छोंन शीलें हरण ककरा कहियै।
सब महीना गुजारै छियै कष्ट सें जैसें–तैसें,
सौन ऐथैं लगै आग तन–मन वदन ककरा कहियै।
पाक केरों इरादा बुरा छै सही जानी–जानी,
देशवाला सुधारै नैं अपनों चलन ककरा कहियै।
देश केरों दशा आय बद्तर लगै नेता चलतें,
बागवाँ ही उजाड़ै यहाँ पर चमन ककरा कहियै।
पश्चिमी सभ्यता के प्रभावें करै सबकें पागल,
रोज देशी चलन के करै सब हवन ककरा कहियै।
बात बाजीव बोलै कहाँ कोय छै कखनूँ 'हीरा'
ठोर सीलों करै शांत चिन्तन–मनन ककरा कहियै।

♦♦♦

।। कामों सें होथौं पहचान।।

कामों सें होथौं पहचान सगरे।
छुछ्छे बातों सें नीनान सगरे।
उपकारी सूरज, पानी, हवा के,
धरती पर देखों गुणगान सगरे।
कथनी सें करनी जों मिन्न होथों,
मिलथों सब्भै सें अपमान सगरे।
जनता के सेवा में मन लगाबों,
सब्भै में होथों सम्मान सगरे।
अंधेरा मन सें 'हीरा' हटाबों,
ताहैं भेटैथों भगवान सगरे।

♦♦♦

।।आकाशों में दीप जलैबै तों की कहभो।।

आकाशों में दीप जलैबै तों की कहभो !
सुतलों बिरनी जाय जगैबै तों की कहभों!

करनी के फल सब्भैं भोगै के नैं जानै,
तइयो जब उत्पात मचैबै तों की कहभो।

सरकारें अंग्रेजी कें जब शान बुझै छै,
बच्चा कें अंग्रेज बनैबै तों की कहभो !
ऊपर सें नीचें तक सब्भे घुसखोरे छै,
ककरा दुखड़ा जय सुनैबै तों की कहभो!

दू–चारे सौ देला सें सब अफसर घामै,
घरहैं बैठी मौज मनैबैं तों की करभो!

मुखिया जी के दसखत सें दरमाहा मिलतै,
आगू ऐथैं शीश झुकैबै तों की कहभो !

अध्यक्षो–सचिव जमाबै धोंस यहाँ 'हीरा',
उनका कहिनों पाठ पढ़ैबै तों की करभो ।

♦♦♦

।। के करतै तकरार तोरा सें।।

के करतै तकरार तोरा सें,
कौनें पैतै पार तोरा सें।

भस्मासुर के नीति अपनैल्हें,
आतंकित सरकार तोरा सें।

नेता–मंत्री बात भूली जा,
परहेजै सरकार तोरा सें।

करनें जा अपकार खूबे तों,
नैं होथों उपकार तोरा सें।
खनदानों के नाम मेटइहों,
हमरा की दरकार तोरा सें।
नित नत्मस्तक होय कें 'हीरा',
मानै छी हम हार तोरा सें।

♦♦♦

।। रस्ता में काँटों गाड़ै छों।।

रस्ता में काँटों गाड़ै छों।
खनदानों सबकें तारै छों।

काम अनर्गल करियो कें,
ककरा सें कहियो हारै छों।

मातु–पिता कें ईश्वर मानों,
लाती सें कहिनें टारै छों।
सत्कार अतिथि के छोड़ी कें,
बाथैं–बाथैं दुत्कारै छों।

कैसें मान–प्रतिष्ठा होथों,
हरदम्में चुगली लारै छों।

लंका केरों नाश करैभो,
रामों कें तों ललकारै छों।

पढ़ला–लिखला सें की 'हीरा',
गोबर में घी जब ढारै छों।

♦♦♦

।। की बतैय्हों हाल सबकें।।

की बतैय्हों आय हम्में हाल सबके।
सच बिगड़लों छै यहाँ पर चाल सबकें।
धर्म के आड़ें बहुत धर्मावलम्बी,
खूब लूटै छै अनूठा माल सबके।
पादरी, पण्डित, पुजारी घोर कामी,
काम आबै छै परन्तु गाल सबके।
ढोल पर कुछ बोल मुश्किल छै बजाना,
खूब चुत्तड़ पर बजै छै ताल सबके।
गौखुरा चोटी बढ़ैनें मूँछ–दाढ़ी,
चन्दनों–टीका बनै छै ढाल सबके।
दोष नैं झलकै कभी ताकतबरों के,
बस गलै कमजोरका पर दाल सबके।
आचरण अपनों बनाबों नीक 'हीरा'
एकदिन लेथों खबर गोपाल सबके।

♦♦♦

।। बढ़लों उत्पात छै।।

खून सें लथपथ हमेशा हाथ छै।
ओकरो अखनी अलग ही बात छै।

जब सबल कें साथ देना नीति तें,
दुर्बलों के साथ अब नैं नाथ छै।

जब गरीबी देह तोड़ी देलकै,
नैं नजर आबै दिवा या रात छै।

टूटलों जकरों मड़इया आय भी,
ओकरा लेली सदा बरसात छै।

ऊँच–नीचों के करिश्मा छै अलग,
एकरा सें भिन्न भी इक जात छै।

जिन्दगी भर दै परीक्षा जानकी,
ठीक मर्यादा समैलों बात छै।

नर्क धरती कें सदा बूझों भले,
स्वर्ग में भी कम कहाँ संताप छै।

सिक्ख, हिन्दू या कि मुस्लिम जे कहों,
सब करै बस घात पर प्रतिघात छै।

छै गिराबट आय 'हीरा' हर जगह,
सिर्फ बढ़लों एक ठो उत्पात छै।

♦♦♦

।। साँपों–छुछुनरी वाला हाल।।

हमरा घरें ब्याहै लें बेटी।
राखलों कीनी बक्सा–पेटी।
जकरा घरें बेटा जवान,
ओकरों देखों अलगे शान।
खोजौं सौंसे जाय इलाका।
सब्भैं माँगै पूरा टाका।
बीस हजार बीघा छों डाक।
तबें तें बजथों तुतरू ढाक।

चपरासी के माँग छौं लाख।
ओकरा आगू जैभें खाक।
माँग रेडियो आरू टी.बी.।
नोर्टो लें थैला छों सीबी।

कहाँ पैबों हेत्तें सामान।
घुरी–फिरी बैठै छी झमान।
करौ दम नैं, छोड़तें मलाल।
साँपों–छुछुनरी बाला हाल।

अगुआ के तों बात न बोलों।
उनका लग बाते जब खोलों।
भरी दहों उनकों तों थैला।
नापी अन्न पाँच–दस पैला।

रुपया–पैसा घरें दहो
बात जे कहथों सब्भे सहो।

तबें वें कोय जूत लगैथों।
झूठ–साँच सब बात बनैथों।

अगर उनकों बात नैं मानों,
अपनों जीद्द जहाँ तों ठानों,
गड़लों बात देथों उखाड़ी।
बनलों काम देथों बिगाड़ी।

करै में बनै नैं छोड़ै में।
बड़ी कठिन रिश्ता जोड़ै में।
येन्हैं बीतथों कतना साल।
साँपों छुछुनरी बाला हाल।

दहेज–दानव मुँह छै बैनें।
बें मानतै बिना कुछ खैनें।
शिक्षा जतना आगू बढ़लै।
पूरा ऊपर मांगो चढ़लै।

सोचों बेटी कें दौं पढ़ाय।
स्कूल में देलौं नाम लिखाय।
ध्यान धरी पढ़ेलों–लिखैलों।
मेहनत सें काविल बनैंलों।

पढ़ली बेटी पढलों जमाय।
जों नैं होतै होतै हँसाय।
पढ़लों खोजै में भटकै छी।
सुनथैं माँग चाँग हटकै छी।

मूर्ख रहती मूर्ख सें करताँ।
खोजै में हेत्तें नैं मरतों।
पढ़ाय पीछू व्यर्थ पैमाल।
साँप–छुछुनरी बाला हाल।

♦♦♦

।। जों तों चाहों।।

जों तों चाहों बिना इलाजें,
सबटा रोग भगाबें
जों तों चाहों बिना कमैनें,
धन–संपत घर आबें

बिन काविल, बिन घूसें चाहों
नौकरी कोय पाबें
रूसलों प्रेमी संगें चाहों,
जों तौं रास रचाबें

यदि तों चाहों छूमंतर में
जीतें केश–मुकदमा
जों चाहै छों घड़ी–पलक में
मेटाबें सब सदमा

भाग्य भरोसे बनी निकम्मा
बैठी ध्यान लगाबों
जंतर–मंतर जादू–टोना
सब्भे तों अपनाबों

तांत्रिक लग तों जैथें रगड़ों
अपनो पूरा नाको
ग्रह काटी सब काम बनैथों
खुलथोंन तोरों आँखो।

♦♦♦

।। वोट।।

वोट गिराबें गेलाँ जखनी
दू–दू हीरो ऐलों तखनी
कहलक तोरों गिरल्हों बोट
सुनथैं हमरा बड्डी कचोट।

देखों कहाँ बन्दूक धारी
वें की देतै सब कें मारी
यही खेत के बोहो मूली
रहतै सबसें मीली–जूली।

हाय प्रजातंत्र ऐलै कोन
करै वहें जेकरों जे मोन
वोटों केरों कहाँ अधिकार
कहिनों होतै हाय सरकार।

यहें छेलै बापू के ख्वाब
लूट–पाट करी बनें नवाव
अखनी कटतियै उनकों नाक
भल्हैं मुनलकै तहिये आँख।

आबी गेलै यहूँ घोटाला
जपै कर्मचारी सब माला
काम छोड़ी वोट गिरायलें
फनूँ ऐबै देतों खायलें।

♦♦♦

।जेकरा खातिर करै छी चोरी।।

गरजी–गरजी बोलले जाय छों झूठे एतना शोर।
जेकरा खातिर करै छी चोरी, वोहीं कहै छों चोर।।

रत्नावली के साथें, ब्याह, जब तुलसी के होलै।
प्यार–मुहब्बत केरों दरिया, बीचें दोनों हेलै।

एक पल नैं नजरों सें दूर, रत्नावली कें राखै।
जीवन के कडुआहट सब्भे, मीट्ठो करी कें चाखै।

जखनी रत्नावली के भाय, तुलसी के घर ऐलै,
मिललै–जुललै हँसी–खुशी सें, खूबे मन हरसैलै।

झट सारों के स्वागत लेली, तुलसी बाहर गेलै,
हिनें दोनों भैया–बहिनी, अद्‌भुत खेला खेलै।

सुन्हैं में दोनों चली देलक, बार्पो–माय के घोंर।
बूँदा–बूँदी सौसें रस्ता, बरसथैं रहलै झोंर।

मिठाइयों के दोना लेनें, तुलसी ऐलै जखनी,
सूना–सूना घर देखी कें, मन पगलैलै तखनी।
दिल में रत्नावली बसैनें, ठाम्हैं वोही राती,
चललै तब ससुराल कहीं नैं, झलकै दीया–बाती।
भादों केरों कादों सगरे, आड़–गेंड़ नैं सूझै।
नद्दी–नाला, उच्चों–लीयों, थोड़े तुलसी बूझै।
नदी–बीच में मुर्दा छेलै, समझी गेलै लकड़ी।
जैसें–तैसें पार उतरलै, मुर्दे पकड़ी–पकड़ी।
साँप लटकलों बूझी रस्सी, पकड़ी कोठा चढ़लै।
रत्नावली नजर सें देखै, भारी पक्कड़ पड़लै।
भेलै आग बबूला रत्ना, नैं कुछ बढ़िया बोलै।
तीक्खों बोली सुनतें–सुनतें, तुलसी जी मुँह खोलै।
तोरा लेली चोरी–चुपके, पग जोखिम में डाली।
ऐलों छी कहिनें उगलै छों, इ रंग जहरे खाली।
मोह त्यागनें चलै छी हम्हूँ, देखलाबों नैं लोर।
जेकरा खातिर करै छी चोरी, वोहीं कहै छों चोर।।

♦♦♦

।। धोखा।।

हमरा देशें फूट–फूटंगर, देखै दुनिया वाला।
नब्ज टटोलै कखनूँ छाती, ऊपर राखै आला।
अपन्हैं में देखै नेता कें, करतें मारा मारी।
पास–पड़ोसी सोचै मन–मन, अबरी लेबै सुतारी।
कोनों गामें कहियो–कहियो, उठथों हुल्लों–सुच्चों।
ध्यान धरी कें देखी लीहो, नाचें ठुट्ठों–बुच्चों।
ओहिनें छै इ पाकिस्तानी, भेजै छै घुसपैठी।
तोड़ी देबै मारी–मारी, सब्भै ठो के ऐठी।।

बाँट–चीट हिस्सा–बखरा जब, घर में होतै जखनी,
तू–तू–में–में हुज्जत–हाज्जत, होबे करतै तखनी।
केकरा घरें झगड़ा–झाँटी, कहियो कहुँ नैं होतै।
फेनूँ सब्भे एक्खै साथें, हँसते, गैतै, रोतै।।
रगड़ा–झगड़ा होतै तइयो, एक्के सब्भे रहबै।
सब दुश्मन के दिल दहलैबे, कभी धाव नैं सहबै।।
हिन्दुस्तानी सदा एक छै, रहें भले कोय जात।
समझी–बूझी ठानें लोगें, फेनूँ यहाँ उत्पात।।

♦♦♦

।।क्षणभंगुरता।।

आकाशों के छाती पर जब, बादल मँडराबै छै।
बादशाह सें कम की कहियो, अपनाँ कें पाबै छै।।
मगर हिमालय सें टकरैथैं, तितर–बितर होला पर,
अपनों देह–दशा देखी कें, अपन्हैं पछताबै छै।।
फूल खिलै छै रंग–बिरंगा, तखनी इठलाबै छै।
तितली चूमै गाल, भाल पर भौंरा मँडराबै छै।
संध्या में सब छोड़ी भागै, देखी कें नैं लौटै,
जखनी ओकरों लाल पँखुड़ी, सब्भे मुर्झाबै छै।
जौनें जकरा प्यार करै छै, मन कें बहलाबै छै।
जकरा सें मिलथैं जीवन के, गम कें बिसराबै छै।
ढलथों उम्र ओकरों जेन्हैं, देखी जन भौंरा रङ्,
दर्शन दैलें फेनूँ लौटी, आगू नैं आबै छै।

ओस कणों कें देखों घासों पर जब इठलाबै छै
दुभड़ी पर मोती के दाना, अहिनों मुस्काबै छै।
मगर सूर्य के आगू ऐथैं, खेल व्यर्थ सब लागै,
नियति–नटी के चाल अनोखा, सबकें भरमाबै छै।

संसारे पूरा क्षण भंगुर, गीतों में गाबै छै।
तइयो लोग जुल्म के चक्की, कहिनें चलबाबै छै।
प्रेम–मोह मिथ्या परिवारे, सपना माल–खजाना,
क्षणभंगुरता नाची–नाची, सबकें समझाबै छै।

♦♦♦

।। चुनाव ।।

नशा चुनावों के जब चढ़लै, बहकी गेलै भैरो।
तितकी सें जब आग पसरलै, लहकी गेलै भैरो।।

शिक्षक केरों कामों सें नैं, उनका कुछ संतोषे।
मान–प्रतिष्ठा बचबै केरों, नैं उनका कुछ होशे।।

त्याग–पत्र भेजी कार्यालय, मुखिया पद लें बौला।
नैं सूझै दिन–रात जरा सा, भारी आरू हौला।।

हुवै नौमनेशन तहिया सें, खुललै रहलै होटल।
बाँटें लगलै चौराहा पर, दारू केरों बोतल।।

खर्चा–बर्चा खूब करलकै, बिकलै कट्ठा डण्टा।
मूँहों सें नैं छूटलै कखनूँ, कोका कोला–फण्टा।।

ठीक समय पर वोटों केरों, गिनती होलै जखनी।
सबसें नीचें नाम सुनै जब, माथों ठनकै तखनी।।

हारों के परिणाम सुनलकै, होलै हक्का–बक्का।
बेटा ई पागलपन देखी, मारें लगलै धक्का।।

हाथ नौकरी सें भी धोलक, कर्जा होलै पूरा।
चौबे छब्बू नहियें बनलै, रहलै ख्वाब अधूरा।।

नैं कोनों गिनती के जैसें, टुटलों पौवा खाटों के।
जैसें धोबी केरों कुत्ता, नैं घर के, नैं घाटों के।।

♦♦♦

।। चौपदी ।।

लुच्चा–लफंगा के छै बोलवाला।
डरें लागै छै सब्भै मुँहें ताला।
हेकरों की मानें यहें रङ् रहतै,
जीतै कहियो नैं कलमों सें भाला।

सत्यानुरागी, धरमों के पुजारी,
रहतै कुच्छू दिनाँ भल्लें दुखारी।
आखिरी विजय सच्चाई के होतै,
जकरा आगू दुनिया जैतै हारी।

देखी समय–साल रस्ता जे चलतै,
सही विचारों के साँचा में ढलतै,
दुर्दिन कहाँ सें ऐतै पास उनकों,
बादल विपत्ति के माथा सें टलतै।

हरवक्त सबसें मिलै छै जे सादर,
ओढ़ै छै जे ईमानों के चादर,
करना भलाई बनैनें छै आदत,
उनके करै छै सदा सब्भैं आदर।

डींग नैं हाँकों, नबाबी नैं छाँटों।
तोहें दुखी जन के तकलीफ बाँटों।
ऐठी जे चलतै, सदा हाथ मलतै,
राह में मिलतै सदा काँटे–काँटों।

अनीति करतै, अन्यायी पछतैतै।
वहें शांति पैतै, जौनें गम खैतै।
करम भूमि छिकै यहें धरती भैया,
यै हाथें करतै, वै हाथें पैतै।

कौरव–पाण्डव बीचें युद्धों भारी।
दुर्योधन के रक्षा में गंधारी।
ऐलै मगर होय गेलै बेकारे,
चलहौ नैं देलकै एक्को मुरारी।

अभिमानी रावण, कंसासुर केसी,
मचाबै उत्पात दुनिया में बेशी।
सत्ता कहाँ ओकरों कायम रहलै,
गिरलै तुरन्ते मुँहों भाटें ठेसी।

न्यायी के नाव तुफानों में चलतै।
सत्तों के सूरज नैं कहियो ढलतै।
ककरो कहाँ सें भला कैसें होतै,
जौनें कि दिन–रात लोगों के छलतै।

स्वर्ग–नरक के छोंन झूट्ठे कहानी,
ऊ सें डरतै आबें थोड़े प्राणी।

सच्चाई बखानों यही धरती पर,
करम फल भोगै इन्साँ या गुमानी।

सही देश भारत उगलै छै सोना।
हीरा–मोती बाँटै भर–भर दोना।
झलकै छै सगरे बहारे–बहारे,
धन धान्यों सें भरलों कोना–कोना।

हिन्द जीतै के सिकंदर यूनानी,
लेलकै जहिया अपनाँ मनें ठानी।
अभिमान ढहलै भारत भूमि ऐथैं,
पढ़नें–सुननें छहो सब्भे कहानी।

♦♦♦

।।उखड़ी में मूड़ी।।

सत्य–अहिंसा, धरम त्यागलों, मिथ्या कें अपनैलों।
लोक–लाज बड़का–बड़का के, सब्भे टा बिसरैलों।
बिन मतलब के झूठ बात में, झूठे कसमो खैलों।
झगड़ा–झंझट या निन्दा में, बेशी समय गमैलों।

सब्भैं करनी के फल भोगै छै, हम्हूँ तें जानै छी।
ककरो समझैलों नैं राखौं, हठ अहिनों ठानै छी।
पछतैला सें लाभ कहाँ छै, जहिनों करलों भरबों।
उखड़ी में मूड़ी देनें छी, चोटों सें की डरबों।

मारिच जब समझाबै रावण, होलै आग बबूला।
पंडित बनभें एक्खै लाती, फाँकें लगभें धूला।
कहै छियों जे बात यही में, छोंन तोरों कल्याण।
उलटा–पुलटा पाठ पढ़ैभें, यही ठाँ जैधों प्राण।

बक्सर वाला मारो मारिच, करी याद घबड़ाबै।
रावण के हाथों सें मरना, अनुचित यहों लखाबै।
निश्चित आजे मरन चलौं तब, राम वाण सें मरबों।
उखड़ी में मूड़ी देनें छी, चोटें कत्तें डरबों।

कहै मंदोदरी लंकेश्वर ! हठ नैं अहिनों ठानों
रामचन्द्र परमेश्वर छेकै, तों बातों कें मानों।
खरदूषण त्रिसरा सब गेले क्षण में तहूँ मानों
जानी–बूझी प्राणनाथ तों, कुइयाँ अब नैं खान्हौं।

मन्दोदरी निरा अज्ञानी, बोलै तब लंकेशो।
हाय दूत के बनवासी कें, जे भेझों संदेशो।
ईश्वर छेकै बड्डी बढ़िया, हाथ ओकरे तरबों।
उखड़ी में मूड़ी देनें छी, चोटों सें की डरबों।
स्कूल कहियो महीना–खाँड़ें, घूमलों हम जाय छी।
गौवाँ कुछ्छु–कुछ्छू बोलै, सुनी कें गम खाय छी।
छोटों–मोटो ऑफिसरों कें, थोड़े जी लगाय छी।
बड़का केरों पारी ऐल्हों, दें लें कें मनाय छी।

साथी–संगत सब्भें कहथों, पड़भें तों फेरा में।
जहिया ऐभें ऊपर वाला, अफसर के घेरा में।
देखी लेबै विद्यालय में, दिन भर कत्तें सड़बों।
उखड़ी में मूड़ी देनें छी, चोटें कत्तें डरबों।

अंग्रेजियत कहाँ भागै छै, अंग्रेजो जब गेलों।
बेशी छै सामान विदेशी, बढ़िया हमरा लेलों।
कोलगेट, मंजन, साबुन लें, पीयों कोकाकोला।
घड़ी, रेडियो चीज विदेशी, लागै छै अलवेला।

शान, गुमान विदेशी चीजे, देखों जरा विचारी।

लोगें कहै गुलामी ऐथों, जकरों ई तैयारी।
ठीक देखलों आजादी कें, गुलामिये में मरबों।
उखड़ी में मूड़ी देनें छी, चोटें कत्तें डरबों।

चुनावों केरों मौसम ऐथों, घूमौं गाँव मुहल्ला।
हमरा देख मचाबै सब्भैं, जनता खूबे हल्ला।
कोय कहै सब्भे छौ लुच्चा, जीती कें जब जैतै।
खोज–खबर लैलें देहातो, घूमी कें की ऐलै।

कोय–कोय पूरा गरियाबै, कोय भेजी दै चाय।
पार्टी वाला अगुआ–पिछुआ, देथों खूब दोहाय
जीती जैभों, सब्भे देभों, वादा करी टुघरबों।
उखड़ी में मूड़ी देनें छी, चोटें कत्तें डरवों।

पढ़ै–लिखै के आय जमाना, आबी गेलै भारी।
परीक्षार्थी परीक्षा खातिर, करै खूब तैयारी।
खर्चा–बर्चा हमरो गार्जन, करै पढ़ै में ढेरी।
लेकिन जुआ–पचीसीवाला हमरा मारै घेरी।

तासों केरों अड्डा जमकै, देखै जे–जे लोगें।
कहै कहाँ तों पढ़बे तोरा, दाबौ बड़का रोगें।
ठीक्के सब्भे पासे करतै, फेल तें हम्हूँ करबों।
उखड़ी में मूड़ी देनें छी, चोटें कत्तें डरबों।

हड़तालों में खूब लड़ै छी, सब्भे सरकारों सें।
सही माँग में कत्ते केना, डरतै तकरारों सें।
ससपेण्ड–डिसचार्ज के धमकी, सुनै छी कत्तें भाय।
अहिनों गीदड़ भवकी सें की, जैतै कोय घबड़ाय।

डटबै माँगों पर नैं हटबै, जे करतै सरकारें।
वादा खिलाफी उ की कहतै, भला लाज के मारें।

सरकारें जे करतै–करतै, हमरा जे छै करबों।
उखड़ी में मूड़ी देनें छी, चोटें कत्तें डरबों।

छठी रात जे लिखै विद्याता, हाव के मेटनहार।
कत्तो नाक रगड़तै सब्भैं, होतै जे होनहार।
सच्चा ई छै जब दुनियार्मे, हाय–तौबा बेकार।
बिना कमैले भेटी जैथों, जे लिखलों छहुँ लिलार।

हाथ–हाथ पर राखी बैठें, पेट कहाँ सें भरतौ।
समझाबै लोगें अन्नों लें, पेटो भूखें जरतौ।
जकरा जे कहना छै कहतै, ककरों रस्ता धरबों।
उखड़ी में मूड़ी देनें छी, चोटें कत्ते डरबों।

♦♦♦

।। गीत–लोरी।।

गीत–लोरी गाबै छी
नूनू कें सुनाबै छी
तोता–मैना बोली–बोली
ठोकी कें सुताबै छी।

काम छै पसरलों
लीपा–पोती धरलों
भनसा के बरतन
चुल्ही गेलाँ धरलों।

नुनुआँ के कारन तनी
फुरसत नैं पाबै छी।
नूनू केरों मामा
पीन्हीं कें पाजामा।

मेला घूमें गेलै
रसीदपुर सुदामा
अइतै लेनें खेलौना
क्को घरबा नैं पाबै छी।

तारापुर हटिया
बेचें जैबै पठिया
नुनुआ लें कीनी लेबै
हाथें–गोड़े मठिया

नूनू के बहाना हन्हूँ
सपना सजाबै छी
गीत–लोरी गाबैछी।

♦♦♦

।। दमकल देखी लेलौं।।

ई जिनगी के कोन भरोसों कहिया चललों जैतै।
माया में ओझरैलका सबकें कैसें के समझैतै।
अर्जन करतें जीवन जैतै शौक बूततै कहिया।
बिछौना अगर बिछैथें बीतै रात, सूततै कहिया।
हमरा नैं अच्छा लागै छों, अहिनों दुनियादारी।
पेटों में नैं खइहों दीहो गोबर में घी ढारी।
होना छै जे होबें करतै, किनलाँ फट–फट गाड़ी।
किनलाँ एक बारगी ढेरी कनियैंनी लें साड़ी।
जन्नें जैतै रोज बदलतै रंग–बिरंगा साड़ी।
हम्हूँ घूमौं जन्नें–तन्नें हुर–हुर करनें गाड़ी।
ई फैशन में बिकबे करतै जाल–जमीनों जग्घों।
नैं राखबै समझैलों ककरों छीयै तें एकबग्घों।

दुख–तकलीफो माथा नाचै ककरा कर्त्तें झेलौं।
जरलै घोंर तें जरबे करतै दमकल देखी लैलौं।

भुखलों–दुखलों पेट सुखलों भीतर धसल्हों आँख।
बैसाखौ जब तितले रहथों कहिया सुखथौं पाँख।
बेटा–नेटा काम की देथौं देखथौं जबकि चन्दा।
हम्हूँ देखनें ऐलों छीयै, ई सब गोरख धन्धा।
जीता जिनगी मौज करिलें वाजीब छै ई बात।
धन–संपत सब धरले रहथों कोय न जैथौं साथ।
खाली हाथें ऐलों छीयै खाली हाथें जैबै।
धरती के सब्भे सुख छोड़ी झूठे नैं पछतैबै।
देश–दुनिया के भ्रमण करिकें लागै मन बहलाबौं।
हरदम खर्चा के तंगी सें जरा चैन नैं पाबौं।
कट्ठा–डण्टा बेची–खोची गेलों तब कलकत्ता।
देखलौं हाबड़ा पुलो बनलों, जे सचमुच अलबत्ता।
दिल्ली–बम्बई खूब घूमलौं कोन जगह नैं गेलौं।
जरलै घोंर तें जरबे करलै दमकल देखी लेलौं।

खैतैं–पीते कोय मरै छै, कोय मरै खाहीलें।
कतनों नाक रगड़तै सबकें एकदिन छै जाही लें।
के देखने छै ऊ लोकों में कोन समस्या बीतै।
जकरा खातिर ई लोकों में जैसें–तैसें जीतै।
जों कपूत छौं की धन संचय ई सब्भै जानै छो।
जों सपूत छों की धन संचय यो हो सब जानै छो।
देनें छै जैनें मुँह देतै वोहीं यहाँ अधारों।

हम्हूँ तोंय आकाशों कें सिर लेनें छों बेकारो।
पेटे काटी धन अर्जन सें नैं होबों धनवाला।
खैतें–पीतें मौज–मनैतें लागै छी मतवाला।
लोग जरै छै तें जरथैं छै, हमरों आपनों मोन।
हमरा से नैं पार लगै छै, जोगी राखबौ धोन।
स्वर्ग धरा पर लानै खातिर कोन बेलना बेलौं।
जरलै घोंर तें जरबे करलै दमकल देखी लेलौं।

♦♦♦

।। बापों कें टीक नैं ।।

सच्चा मानों तोंय हमरों कहलका।
बाते नैं राखथों बेटा पढ़लका।
चलै सड़क पें हरदम सीना–तानी
सबसें झगड़ा करथों जानी–जानी।
बापें पीन्है छोंन धोती फटलका।
मैया के अंगिया पेनें सटलका।
बापों रंग देखों कोय नैं सोझों।
माथा पर परिवारों के बोझों।
घरबा के कामों में हरदम फसलों।
ओनबिन आँख–कान लगै छै धसलों।
कहलों नैं जैथों बेटा के शेखी।
रस्ता चलै देहवा देखी–देखी।
जुल्फी में फूल फुलै जेना गोटों
बापों के टीक नैं बेटा कें झोटों।
चस्का सिनेमा के बेटा कें भारी

घूमैलें जैथों सब्भे काम टारी।
ही–ही हा–हा में सौंसे दिनबीतै।
भाग्य फटलका तें बाहैं नैं सीतै।
कौनें की कहतै जरियो नै गम छौं
मुँहों पें बोलै के ककरा दम छौं।
देखै में लगै नवाबों के नाती।
झूमी कें चलथौं जैसें की हाथी।
मैया बोलै जखनी कानी–कानी
बेटा कें आँखी में तनियों नै पानी।
गोस्सा सें बापें जखनी मुँह खोलै।
चढ़ी कें माथा बेटा बात बोलै।
बापें कहै कि तकदीरे छों छोटों
बापो के टीक नैं पूता कें झोटों।
बापें सोचै दुख होतों बीरानों
बेटा घरों में अब होलों सीयानों
पीठी पर बेटा, जूती सें कमैतों
कहूँ भूखें प्यासें कथी लें चमैतों
बादल बिपत्ति के माथा सें टलतै
नोन–तेल घरों में बढ़िया सें चलतै
मगर बेटा झाड़ै फाड़ी तिरंगा।
सड़कों पर खुल्लै करै नाच नंगा।
खाय–खाय भांग पीयै रोज ताड़ी।
बापों कें नैं रोज मिलै खेसाड़ी।
बापों सें उलटा चलै चाल मोटों
बापों के टीक नैं पूता कें झोटों।

♦♦♦

।। जहिनों गलती हम्में करलौं।।

हरदम तोरा बुझाबै छियौ, भैया बात सुनें नै डर।
जहिनों गलती हम्में करलों वोहिनों गलती तों नैं कर।।
हमरा बापें कहै पढ़ी ले काम–काज कुछ करिहें तों।
जुआ–पचीसी खेली–खेली धन–संपत नैं हरिहें तों।
नैं राखलों कहलों बापों के झूट्ठे बाप करै चर–चर।

जहिनों गलती....

हमरा रस्ता पर नैं देखी चिंता बापों के बढ़लै।
जल्दी बीहा–शादी करियै भूते माथा पर चढ़लै।
बात मनों के होतैं देखी कथिलें करतौ चर–चर–चर

जहिनों गलती....

चौदह बरस जखनियें होलै होलै तें हमरों सादी।
चार महीना में ही गौना शुरु होलै तब बरबादी।
पाँच साल में छों ठो बुतरू कोय कंधा कोय काँखी तर

जहिनों गलती...

तेल–फुलेल जुटाना मुश्किल बुतरू कलटै दूधों लें।
कर्जा जकरों माँगी लानौं ऊ तें बौला सूदों लें।।
सूद कहाँ सें देबै हम्में असलो आफत माथा पर।

जहिनों गलती....

ऐना टिकली पाउडर लेली खिच–खिच रोजे होथैं छै।
जों टैढ़ों कुछ बोली बोलौं हाथ लोर सें धोथैं छै।
ओंठों के मुस्कान बिलैलै आँखी में आँसू झर–झर
जहिनों गलती....

महँगी के आलम देखै छी बड़का ठो परिवारे छै।
छों बुतरू दू जीव आठ के नव फसल मझधारे छै।
जिनगी पहाड़ अहिनों लागै, बोझों सें कॉपौ थर–थर।
जहिनों गलती हम्में करलौं वहिनें गलती तों नैं कर।।

♦♦♦

।। ऊ जीना की छेकै जीना।।

जीना, केन्हौ कें भी जीना,
ऊ जीना की छेकै जीना।

फूल बाग में जे नैं खिललै।
भौरा सें नैं आँखे मिललै।
तितली वै पर नैं मँड़रैलै।
नैं ककरो देखी इतरैलै।
गंध–सुगंध नदारत छेलै।
आँसू के दरिया में हेलै।
जनम व्यर्थ ईश्वर के देलों।
केन्हौ जीवन नैया ठेलों।
हीन भाव मन रहै समैलों।
भौरा तितली सें सकुचैलों।
चुपके घुटघुट आँसू पीना।
ऊ जीना की छेकै जीना।

जरा शांति नैं परिवारों में।
रहना मुश्किल घर–द्वारों में।
हरहर–कचकच हरदिन होतै।

हाथ रोज आँसू सें धोतै।
गारी–बात नसीब हमेशा।
हुज्जत कें मानी लै पेशा।
नैं करना कुछ काम–कबारू।
कोय मस्त पीबी कें दारू।
दियें धान मुँह फूटें लाबा।
घर सें भागों काशी–काबा।
मक्का चाहें बसों मदीना।
ऊ जीना की छेकै जीना।

♦♦♦

।खोटा कें होल्हों।।

दुनिया देखैलें कहिया तों गेल्हैं।
की देखी–देखी पागल तों भेल्हैं।
दू पैसा होलों जोगी कें राखें,
लागै छौ जेना झूट्ठे उमतैल्हैं।
बीकी जैबें अभियो कौड़ी के भाव।
खोटा कें तनियें टा पानी हेलाव।

रावण–कंसासुर जग में के रहलै।
जकरा सें देवी–देवा भी दहलै।
बड़का–बड़का गुमानी कें देखलौं,
सब्भै के गुमान क्षणभर में ढहलै।
आगिन नैं उगलें नैं हमरा धमकाव।
खोटा कें तनियें टा पानी हेलाव।

जब तेसरों प्रयास करलकै, पुल के रेलिंग लाँघ,
गहरों नदी में मारै छै, बड्डी जोर छलाँग।
ई बारी भी सयोगों सें, पानी ही कम छेलै।
फेरू बचला केरों कारण, पूरा ही गम भेलै।।
चौथों वार जहर पीबी कें, चाहै जान गमाना।
मगर जहर में रहै मिलावट, नैं तें जहर पुराना।
बचियै गेलै ई बारी भी, देखों खेल–तमाशा।
ढेर जियै लें चाहै बाला, के नैं अखनी आशा।।

♦♦♦

।। मंत्री जी।।

सुलतानगंज स्टेशन पर जब
उतरै मंत्री एक।
कुच्छू नैं देखै छै बजतें,
लौडीस्पीकर डेक।।

मंत्रीजी के हालत होलै,
देखों तें बेढंग।
स्वागतकर्ता एक्को नैं छै,
जानी रहलै दंग।।

मंत्री जी के पारा चढ़लै,
सौ डिग्री सें पार।
आग बबूला होलों मारै,
कस्सी कें फुफकार।

अमचा–चमचा ऐलों छेलै,
जे–जे उनका संग।
मोबाइल देखी कें बोलै,
मंत्री मंडल भंग।।

सुनथैं पारा नीचें गिरलै,
नाड़ी होलै सुस्त।
पाजामा ढीला होलै जे,
रहै अभी तक चुस्त।।

काटों तें खूने नैं देहै,
मंत्री जी के हाल।
आबें नारद बाबा नाँकी,
बजबों तों करताल।।

♦♦♦

।। पाकिस्तानी छै लतकुच्चों।।

पाकिस्तानों के सीमा पर उठलै हुल्लों–हुच्चों।
सचमुच सब्भे पाकिस्तानी लागै छै लतकुच्चों।।

धोखावाजी सें आबी कें, भारत कें कनबैलें।
कतना घण्टा नाची–गावी, तोहीं जश्न मनैलें।
बिरनी के खोता में हुर्रों मारै वाला बोलें,
अपनों करनी के फल अभियो पैलैं की नैं पैलें।
बचाव लेली शोर मचाबें, पापी पाकिस्तानी।
डेढ़ दिनाँ में इमरानों तें, बनलों छौ अभिमानी।
साँपों कें जब दूध पिलाना, समझी बड्डी घातक,
युद्धों लेली बड़ी उतारू लागौ हिन्दुस्तानी।
कटलौ कानें इमरानों के, होलों छौ कनबुच्चों।
सचमुच सब्भे पाकिस्तानी, लागै छै लतकुच्चों।।

रक्तबीज के वंशज छेकें, नैं रखवें समझैलों।
तों नैं बुझबें ठिकरी सें भी, फूटै कोनों धैलों।

भारत सें टकराबै वाला, तोरोंं छौ मनसूबा,
की देखी–देखी कें अखनी, लागै छें उमतैलोंं।
चीन–अमेरिका जे–जे रहै, तोरोंं दोस्त पुराना।
देखी कें बदनीयत तोरोंं, छोड़ौ अब समझाना।
आतंकी कें पोसै वाला जानी कें अब तोरा,
गोस्सा में ऊ शुरू करलकौ, तोरा अब गरियाना।
अपन्हैं खातिर खोधै छें तों, सगरे खद्धा–खुच्चोंं।
सचमुच सब्भे पाकिस्तानी, लागै छें लतकुच्चोंं।।

♦♦♦

।। नारी।।

नारी सब जीवोंं में भोली, सबकुछ सहनें आबै छै।
जप–तप–व्रत करलोंं सब अपनोंं, पति के नाम लिखाबै छै।।
युद्ध जितलकै कैकेयी जब, देवासुर संग्रामों में।
श्रेय देलकै ई सब जोड़ी, राजा दशरथ कामों में।।
हे प्रियतम हमरोंं तन–मन–धन, सब्भै के तों अधिकारी।
युग–युग सें चललोंं ऐलोंं छै, कहलाबै लोकाचारी।।
हमरोंं देहोंं पर जे सजलोंं, सबमें तोरोंं नामे छै।
हमरा लें तोरोंं घर–द्वारे, लागै बाबा धामे छै।।

देह–गात में लगलोंं हल्दी, भाल बिन्दिया चमकै छै।
हाथ–हथेली लगै मेंहदी, माथा गजरा गमकै छै।।
माँगोंं में सिन्दूर भरलका, देखी सब्भैं जानै छै।
मंगलसूत्र गला में देखी, अहिवाती सब मानै छै।।
होठोंं सें नथुनी अठखेली, बिंदिया पाँव महावर छै।।
हाथें चूड़ी कंगन सबमें, तोरे नाम उजागर छै।।
हमरा नामों के गाड़ी के, लागै चक्का जामे छै।
हमरा तें तोरॉं घर–द्वारे, लागै बाबा धामे छै।।

गर्भाशय में बच्चा पाली, पूरा खून जराबै छी।
प्रसव–वेदना भोगी–भोगी, तइयो हम हरसाबै छी।।
जन्म दियै बच्चा कें हम्में, बच्चा जीवन पावै छै।
बेटा ककरोंं जे भी पूछै, तोरो नाम बताबै छै।।
हमरा नामोंं केरोंं नीचें, तोरोंं नाम जरूरी छै।
कोय कहाँ हमरा पहचानै, कहिनों ई मजबूरी छै।।
नेम प्लेट तोरा नामों के, देखै सौंसे गामे छै।
हमरा लें तोरोंं घर–द्वारे, लगै बाबा धामे छै।।

♦♦♦

।। चिन्ता।।

मौका पाबी ऐथोंं चिन्ता
जर्जर देह बनैथोंं चिन्ता
अड्डी गाड़ी बैठी रहथोंं,
आबी कभी न जैथोंं चिन्ता।

झगड़ा–झंझट में जोंं पड़भें,
विष के घूँट पिलैथोंं चिन्ता।
देहोंं के सब खंभा–खुट्टा,
रोजे–रोज हिलैथोंं चिन्ता।

परिवारोंं कें बड़का बोझें,
तोरोंं खूब बढ़ैथोंं चिन्ता।
संतानों के बाल विवाहें,
जाबें कभी न देथोंं चिन्ता।

कर्जा में डूबी गेला पर,
बढ़िया मौत बतैथों चिन्ता
भल्लों बोली भल्लों कामें,
हीरा दूर भगैथों चिन्ता।

♦♦♦

।। अंगिका लें मरथैं छी।।

अंग–अंगिका लेली हम्में,
रातो दिन तें मरथैं छी।
पर लोगों कें बढ़तें देखी,
भीतर–भीतर जरथैं छी।।
टँगड़ी पकड़ी घीची लेना,
हमरों काम अनोखा छै।
बोली हमरों बढ़िया लेकिन,
सब कामों में धोखा छै।।
जोरों सें बोली कें सबके,
बातों कें झुठलाबै छी
अपनों डफली, अपनो रागे,
हरदम्में तें गाबै छी।।
राग अगर जें गड़बड़ होल्हों,
नैं तइयो शरमाबै छी।
अपनों करनी झाँपी–पोती,
लोगों कें भरमाबै छी।।
सब सें बढ़लों हम्में एगो,
ई हो तें दम भरथैं छी।
पर लोगों कें बढ़तें देखी,
भीतर–भीतर जरथैं छी।।

♦♦♦

।। सदा हँसैलों श्रोता कें ।।

गम पीबी कें सदा हँसैलों श्रोता कें।
दर्द दिलों कें कहाँ दिखैलों श्रोता कें।
ऐतें–जैतें गजल सुनैलें चाही कें,
जीयै के कुछ पता बतैलों श्रोता कें।
जीवन जीना बडा कला छै दुनिया में,
झुक्कै के कुछ अदा सिखैलों श्रोता कें।
श्रोता के गम के बातें कें बोली कें,
भाव टटोलें अला अलगैलों श्रोता कें।
आयोजक के दशा–दिशा शोधी 'हीरा',
जाँचै खातिर तुला बनैलों श्रोता कें।

♦♦♦

।। हितैषी पर भरोसा।।

गजलकारें बनैतै दोसरों दुनिया जहानों में।
तभी तें फेंक पत्थर छेद करतै असमानों में।
अरे पर्यावरण खातिर लगाना पेड़ आवश्यक,
लगावों चार महलों पर हरा पौधा मकानों में।
हितैषी पर भरौसा नैं रखों उलझन अगर कोनों,
जहर डलवाय छै पैसा बलों पर आय पानों में।
मुसीबत के घड़ी पहचान वाला आदमी मिलथों,
मिटै संकट टलै तकलीफ आबै जान जानों में।
चलै में राह बहरापन सदा घातक लगै 'हीरा',
सुरक्षा लें मशीनों के करों उपयोग कानों में।

♦♦♦

।। प्रकृति गीत।।

प्रकृति आगू चलतै ककरो बस–गुमान भैया।

कहीं उबाबै कहीं डुबाबै धरती चारो दीश।
कहीं पें जारै कहीं पें मारै झाड़ै पूरा खीश।
कहीं उजाड़ै घरबा तूफान भइया।। प्रकृति...

उमड़ै सागर पानी बीचें केतना गाँव समाय।
धन–जन आरो माल मवेशी, केतना भसलों जाय।।
बाढ़ें लै छै सब्भै के जान भइया।। प्रकृति...

धरती डोलै तखनी घर–घर, सगरे मातम छाय।
उच्चों–उच्चों महल–अटारी, झलकै धाराशाय।
जेकरों कहाँ कहियो अनुमान भइया।। प्रकृति...

उनका ठनकै वर्षा धरियाँ, कहियो लू बरसाय।
धरती पर के जीव–जन्तु सब, ठाम्हैं करै सझाय।।
दै लै कहाँ जानै जीवन–दान भइया।। प्रकृति...

माहामारी गामें–गामें दै जखनी फैलाय।
जवान–बूढा, बच्चा–बुतरू लै गोदी बोलाय।
करै छै कत्तें घरबा, सुनसान भइया।। प्रकृति...

कोरोना के आगे जललों छै पूरा संसार।
हाथ–पैर कतनों भी मारै नैं कोय पाबै पार।
जकरों चर्चा पूरा जहान भइया।। प्रकृति...

मारै या की जिलाबै सब्भें ओकरे छेकै काम।
प्रकृति छेकै धरती पर के, भगवानों के नाम।
डरें करै छी हम्हूँ गुणगान भइया। प्रकृति...

♦♦♦

हीरा प्रसाद 'हरेन्द्र' : एक परिचय

जन्म : 06/09 /1950, कटहरा, सुलतानगंज, (भागलपुर)

सम्मान/पुरस्कार/उपाधि :

1. डॉ0 अम्बेदकर फेलोशिप, राष्ट्रीय सम्मान (05/12/2001)
   (दलित साहित्य अकादमी, दिल्ली)
2. खूब लाल महतो स्मृति पुरस्कार (उत्तंग हमरों अंग लेली)
   (अ0 भा0 अंगिका साहित्य कला मंच) (09/06/2001)
3. जगदीश पाठक मधुकर– कुल विभाकर (05/05/2002)
   (समय साहित्य सम्मेलन, पुनसिया, बाँका)
4. इन्दिरा देवी स्मृति सम्मान (12/08/2003) (बरियारपुर, मुंगेर)
5. जनार्दन बाबू रजत स्मृति सम्मान (08-09/11/2003)
   (अ0भा0 अंगिका साहित्य कला मंच, खगड़िया)
6. पंडित गोपी नाथ तिवारी पुरस्कार (25/12/2005)
   जाह्नवी अंगिका संस्कृति संस्थान, पटना
7. सरला स्मृति साहित्यकार सम्मान (अंगप्रिया के सफल सम्पादन लेली)
   जानकीपुर पबई (बाँका) (09/12/2007)
8. गोपाल प्रसाद सिंह सेवा निवृत प्र0 अ0 स्मृति सम्मान
   (बाबा दूबे भयहरण स्थान सलेमपुर, अमरपुर (बाँका) 8 मार्च 2008)
9. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र रजत स्मृति सम्मान ('ठकहरा' लेली) (15/06/2008)
   (हिन्दी भाषा साहित्य परिषद्, खगड़िया)
10. पंडित जगदीश पाठक मधुकर, काव्य साहित्य साधना स्मृति सम्मान
    (भागलपुर प्रमण्डलीय अ0भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन)
11. स्व0 वैकुण्ठ विहारी स्मृति सम्मान (तारापुर, मुंगेर)
12. राहुल सांकृत्यायण स्मृति सम्मान (21 फरवरी2010)
    अन्तर्राज्य सद्भावना बहु–भाषी काव्योत्सव, उधाडीह, भागलपुर
13. आदिकवि सरहपा स्मृति सम्मान (11 अप्रैल 2010)
    अ.भा. अंगिका साहित्य कला मंच सरहपापुरम्, कहलगाँव
14. जय प्रकाश मोदी स्मृति सम्मान (14 मार्च 2011)
    कवि रत्न (विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ)
15. हास्य शिरोमणि सम्मान। 9.5.13 महादेवपुर (अमरपुर) बाँका।
16. भगीरथ बाबा अंग साहित्य सम्मान। 01.02.2014,
    अखिल भारतीय अंगिका साहित्य विकास समिति
17. माहताब अली रजत स्मृति सम्मान। 09.0302914
    भावांजलि लेली, हिन्दी भाषा साहित्य परिषद् खगड़िया।
18. उमानाथ पाठक स्मृति सम्मान। 30.03.2014
    अजगवी नाथ साहित्य मंच, सुलतानगंज

19. गौतम बुद्ध राष्ट्रीय सम्मान 2019
राजगीर महोत्सव, राजगीर (बिहार)
20. तिलका मांझी राष्ट्रीय सम्मान 2019
अंग मदद फ़ाउण्डेशन, तुलसी मिश्र लेन (चंपानगर)
1. कवि रत्न (विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ)
2. अंग श्री (अ0 भा0 भाषा साहित्य सम्मेलन प्रमंडलीय शाखा, भागलपुर)
3. अंग श्री (क्षेत्रीय सर्वभाषा कवि सम्मेलन, खड़िया, मुंगेर)
4. साहित्य श्री (अ0 भा0 भाषा साहित्य सम्मेलन, भोपाल)
5. साहित्य रत्न (मंगनी लाल स्मृति ट्रस्ट, बौंसी, बाँका)
6. अंग शिरोमणि (राज्य स्तरीय सर्व भाषा सद्भावना काव्योत्सव, उधाड़ीह, भागलपुर)
7. कवि शिरोमणि (विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, गाँधीनगर, ईशीपुर, भागलपुर)
8. पंचशील शिरोमणि (पंचशील चैरिटेबुल सोसायटी, 25/4 कड़कड दुम्म एरिया,
सेंट्रल बैंक के ऊपर, नई दिल्ली 110 092–भारत)
9. अंग–पतंग (अ0भा0 अंगिका साहित्य सम्मेलन, जिला शखा–भागलपुर)
10. अंगिका सपूत (अ0भा0 अंगिका साहित्य कला मंच प्रखण्ड शाखा–शंभुगंज)
11. महाकवि– (विक्रमशिला हिन्दी विद्या पीठ)
12. अंग सपूत (23/10/2016)
सर्वांगीण विकास परिषद् झारखण्ड राज्यान्तर्गत के0 का0 ऊर्जा नगर, महागामा
13. साहित्य रत्न 26 जनवरी 2020
क्रांतिशील बुद्धिजीवी साहित्यमंच बरियारपुर (मुंगेर)

प्रशस्ति (ढेर साहित्यिक संस्था द्वारा)

देश–विदेश के स्तरीय पत्रिका में रचना प्रकाशित आरु आकाशवाणी भागलपुर तथा दूरदर्शन पटना से अंगिका आरू हिन्दी रचना संप्रसारित
शैली–विसंगति में हास्य खोजी कें व्यंग्य प्रहार करना।
महामंत्री– अखिल भारतीय अंगिका साहित्य कला मंच।
सम्प्रति–सम्पादक– मंजिल / अंगप्रिया/देवायतन
सम्पर्क – ग्राम+पो0–कटहरा, सुलतानगंज (भागलपुर)–813213
मो0–9931854246